आयाम

तृतीय अंक, 2018-19

अम्बर
की एक पाक सुराही
बादल के जाम उठा कर
घूँट चांदनी पी है हमने
बात कुफ़्र की, की है हमने
-अमृता प्रीतम

जब
नाश मनुज पर
छाता है तो पहले विवेक
मर जाता है
- रामधारी सिंह 'दिनकर'

सुख
दुःख के मधुर मिलन
से यह जीवन हो परिपूर्ण
फिर घन में ओझल हो शशि
फिर शशि में ओझल हो घन

- सुमित्रा नंदन पन्त

विन्देम देवतांवाचम मृतामात्मनः कलाम्
(अमृतरूपा और आत्मा की कला-रूप
वाग्देवी हमें प्राप्त हो)
- भवभूति

हौसला
तू खुरशीद है बादलों में न छुप
तू महताब है जगमगाना न छोड़.
तू शोखी है, शोखी रिआयत न कर
तू बिजली है बिजली , जलाना न छोड़.
अभी इश्क़ ने हार मानी नहीं
अभी इश्क़ को आजमाना न छोड़.

- कैफ़ी आज़मी

हिन्दी विभाग

कमला नेहरू कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय